Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

# PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

*Dr Hemant Kumar Singh*

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

*Herambh Welfare Society*

Varanasi (India)

# नक्सलवाद

डॉ० राजनाथ[9]

नक्सलवादी आन्दोलन एक अति वामपंथी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक सशस्त्र जन विद्रोह व जन आन्दोलन है। यह मार्क्सवाद की तीसरी पीढ़ी, तीसरी संतान अथवा तीसरा संस्करण है। जो भारत में सशस्त्र क्रान्ति द्वारा नव साम्राज्यवादियों, तथा उनके दलाल कॉरपोरेट पूँजीपतियों, नौकरशाहों, सामंतों, जमींदारों की राजसत्ता को पलट कर गरीब, मजदूर, किसानों, भूमिहीनों, खेतिहर औद्योगिक मजदूरों, दलित, आदिवासियों, पिछड़ों, मेहनतकशों का राज्य कायम करना चाहता है।[1] ये अपने संघर्ष को दीर्घकालीन लोक या जन युद्ध का नाम देते है। मिडिया के मुताबिक ये 2050 तक अपना राज्य कायम कर लेंगे, पर इनके अनुसार 2025 तक ये कामयाब हो जायेंगे।

## भारत में नक्सलवाद

नक्सलवाद को माओवाद का भारतीय संस्करण भी कहा जाता है। भारत में सबसे पहले 8 मई 1967 को यह आन्दोलन दार्जिलिंग जिले के सिलिगुड़ी परगना के नक्सलवाड़ी गाँव में प्रारम्भ हुआ और देखते ही देखते आस–पास के बीस गाँवों के 240 किलोमीटर के दायरे में फैल गया। इस आन्दोलन का मूल पात्र जंगल संथाल नाम का एक आदिवासी व्यक्ति था। इसके पास थोड़ी सी जमीन थी, जिस पर वह खेती किया करता था। परन्तु जमींदारों व सामन्तों को यह बात अच्छी नहीं लगती थी कि एक आदिवासी अपनी जमीन पर स्वतन्त्र ढंग से खेती बारी कर अपनी जीविका चला रहा है। उन्होंने उसकी जमीन दखल कर ली, और जंगल संथाल को अपनी जमीन से बेदखल कर दिया। यह बात जब अन्य संथाल आदिवासियों को पता चला, तो वे एकजूट होकर जमींदारों के खिलाफ सशस्त्र आन्दोलन पर उतर आये और देखते ही देखते यह आन्दोलन खाड़ी–बाड़ी नक्सलवाड़ी, खासी देवा तथा सिलीगुड़ी थानार्न्गत अन्य किसानों में विद्रोह के रूप में फूट पड़ा। आज यह भारत के 252 जिलों में 40 हजार वर्ग किमी0 क्षेत्र तक फैल गया। नक्सलवादी आन्दोलन के नेता चारू मजूमदार व कानू संयाल थे। नक्सलवादियों का नारा था –1. जमीन जोतने वाले की जमीन है, 2. राजनीतिक सत्ता क्रान्तिकारी कमेटी के हाथ में हो, नक्सलवादी इसे कृषि

[9] एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यक्ष सामाजिक विज्ञान विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

क्रान्ति कहते हैं, और सशस्त्र क्रान्ति द्वारा वे भारत में सामन्तवादी, पूँजीवादी व्यवस्था को पलट कर नवजनवादी, समाजवादी व साम्यवादी व्यवस्था का नीव डालना चाहते हैं।[2]

## नक्सलवाद क्या है

मार्क्सवाद, लेनिनवाद, माओवाद से प्रेरित, नक्सलवाद एक सशक्त सशस्त्र राजनीतिक जन आन्दोलन है, जो भारत में साम्राज्यवाद, सामंतवाद को समाप्त कर, सर्वहारा अर्थात् मजदूर किसान राज्य कायम करना चाहता है। जाहिर तौर पर नक्सलवाद के सैद्धान्तिक रणनीतिक व कार्यनीतिक स्रोत मार्क्सवाद, लेनिनवाद व माओवाद ही है। यह आर्थिक व सामाजिक हालात से उपजा एक राजनीतिक आन्दोलन है, इसकी पहचान मार्क्सवाद की चौथी पीढ़ी है। नक्सलवाद तथा माओवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, चूँकि इस आन्दोलन की शुरूआत नक्सलवाड़ी से हुई, इसलिए यह दुनिया में नक्सलवाद के नाम से प्रचलित हुआ। बहुत से लोग इसे पिछड़ेपन तथा भूमि सुधार की समस्या मानते हैं। जो गरीबी बेरोजगारी व सामंती दमन ने पैदा किए तथा विकास जिसका विकल्प मानते हैं, जो सच्चाई से कोंसो दूर व अप्रासंगिक है, नक्सलवादियों की नजर में मुक्ति क्रान्ति ही इसका समाधान है, तथा वे 1917 के अक्टूबर क्रान्ति तथा 1949 के चीनी सर्वहारा नवजनवादी क्रांति को अपना मॉडल प्रारूप मानते हैं।

मार्क्स दुनिया के प्रथम साम्यवादी नहीं थे। मार्क्स से पहले साम्यवाद व समाजवाद की अवधारणा अंकुरित हो चुकी थी। साम्यवाद का जनक सुकरात का शिष्य प्लेटों था। प्लेटों के शिष्य अरस्तु ने व्यक्ति को एक राजनीतिक प्राणी करार दिया यानि मजदूर भी एक राजनीतिक प्राणी है। जैसा कि सर्वहारा एक राजनैतिक शब्द है। मार्क्स से पहले ब्रिटेन तथा फ्रांस में समाजवादी विचारक पैदा हुए। फ्रांस में बावेफ, सेण्ट साइमन, चार्ल्स कोरियर, लई ब्लांक तथा इंग्लैण्ड में जान दी सिसमाण्डी, डॉ0 हॉल विलिफ थाम्पसन, रावर्ट ओवेन मार्क्स के पूर्ववर्ती समाजवादी विचारक है।[3]

भारत में नक्सलवादी आन्दोलन के प्रणेता चारू मजूमदार थे। इनका जन्म 5 मई 1917 को बनारस में हुआ था, इनके पिता विरेश्वर मजूमदार एक स्कूली शिक्षक थे। 20वीं दशक के पूर्वार्द्ध में इनका परिवार पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में जाकर बस गया।

नक्सलवाद का सीधा जुड़ाव ग्रामीण पृष्ठभूमि से है, खासकर भूमिहीन किसानों व खेतिहर मजदूरों से जिनके पास अपनी जमीन नहीं थी, जो मनी बटैया अथवा पट्टे पर जमीन लेकर खेती बारी करते थे। इस संदर्भ में चारू मजूमदार ने जो घोषणा की वह नक्सलवाद को सम्पूर्णता में जानने व समझने के लिए बेहद प्रासंगिक है। चारू मजूमदार ने सी0पी0आई0 के भीतर किसानों के सशस्त्र संघर्ष को कार्यनीति व रणनीति के तौर पर ठोस रूप से आगे बढ़ाने के लिए हमेशा बल दिया।[4]

8 मई 1967 को नक्सलवाड़ी विद्रोह शुरू हुआ। यह किसान विद्रोह भारत के इतिहास में नक्सलवादी आन्दोलन व विद्रोह के नाम से जाना जाता है।[5] नक्सलवादी आन्दोलन को लेकर एक समिति नक्सलवाड़ी क्षेत्र का दौरा

किया। सरकारी कम्यूनिस्ट हों या अर्थशास्त्री, लेखक हों अथवा पत्रकार समिति की यह सोच थी कि भूमि सुधार कार्यालय द्वारा अगर कुछ जमीन इनमें बाट दी जाय तो समस्या का समाधान निकल आयेगा, पर आन्दोलनकारियों के लिए यह लड़ाई सिर्फ जमीन की लड़ाई नहीं थी, यह इससे बहुत आगे मजदूर किसान राज्य बनाने की लड़ाई बन चुकी थी। नक्सलवादी आन्दोलन के उद्देश्यों पर कलकत्ता में 11 नवम्बर 1967 को शहीद मीनार पर एक आम सभा हुई, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में चारू मजूमदार ने अपने विचार व्यक्त किये, इन्होंने कहा कि नक्सलवाड़ी के किसानों ने जमीन या फसल के लिए नहीं, बल्कि राजनीतिक सत्ता के लिए यह लड़ाई लड़ी है। इस लड़ाई में उन्होंने घरेलू हथियारों के जरिये, क्रांतिकारी सशस्त्र राजसत्ता का मुकाबला किया है, और किसी के निर्देश के इंतजार में बैठे रहने के बजाय, उन्होंने इस लड़ाई को अपने पैरों पर खड़ा होकर लड़ा है।

वर्ष 1967 से लेकर वर्ष 2013 तक अर्थात् 46 वर्ष बाद नक्सलवादी आन्दोलन विभिन्न चरणों से गुजरते हुए, कई राज्यों में अपना पैर पसार चुका है। क्रांतियां कभी सीधी रेखा में गमन नहीं करती है। भारत में भी नक्सलवादी आन्दोलनों को भारी उतार–चढ़ाव के दौर से गुजरना पड़ा है। इन छियालिस वर्षों में नक्सली 40 समूह में बट गये और परस्पर खून की होली खेलने लगे, इनके बीच संघर्षों का भी कारण था। इनके आपसी संघर्ष अकारण नहीं थे।[6]

चारू मजूमदार ने भारत में सर्वहारा क्रान्ति को नई दिशा दी। चारू का नारा था, गाँव हमारा, राज हमारा, ''चुनाव का इस्तेमाल हमें क्रान्तिकारी राजनीति को फैलाने के लिए करना चाहिए।'' चारू मजूमदार का यह आठवां दस्तावेज था। संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष करके ही सर्वहारा क्रान्ति आगे बढ़ेगी जैसा कि बंगाल के गैर कांग्रेसी संयुक्त मोर्चा सरकार का सी. पी.एम. घटक थी। आहिस्ते–आहिस्ते बंगाल के जमींदार व जोतदार सी.पी.एम. का राजनीतिक आधार बनने लगे। जबकि भूमिहीन मजदूर व गरीब किसान नक्सलवादियों के 5 जुलाई 1967 को पीपुल्स डेली चीनी कम्युनिष्ट पार्टी के मुख पत्र के सम्पादकीय में ''नक्सलवादी को भारत में बसंत का तेज आवाज कहा गया।''

भारत में सी.पी.एम. चीनी कम्युनिष्ट क्वोंमितांग व रूसी मेनशेविकों कम्यूनिष्ट की भूमिका निभा रही थी। मोर्चा सरकार की ओर से दमन अभियान चलाया गया। पुलिस व जमींदारों की गुण्डा वाहिनी नक्सलियों को मौत की नींद सुलाने लगी। सी.पी.एम. नेता फूले नहीं समाये कि नक्सलवादी आन्दोलन का कफन दफन हो चुका, पर सच्चाई इससे परे थी सी.पी.एम. के खिलाफ पार्टी में विद्रोह फूट चुका था। जिसके कारण इसमें विभाजन हुआ और 22 अप्रैल 1969 को सी.पी.आई.एम.एल. का जन्म हुआ। नक्सलवादियों ने ग्यारह लोगों की कमेटी बनाई। यह भारत में सर्वहारा वर्ग की पार्टी थी। जिसका उद्देश्य सर्वहारा क्रान्ति था। पार्टी की घोषणा के साथ बंगाल के छात्र नौजवान देश में सर्वहारा क्रान्ति के लिए आगे बढ़े। 20 अक्टूबर 1969 को कन्हाई चटर्जी, अमूलसेन, चन्द्रशेखर दास इत्यादि ने एम.सी.सी. का गठन

किया। ''स्ट्रेटीजी एण्ड टैक्सिस'' नामक दस्तावेज में एम.सी.सी. ने पीपुल्स आर्मी तथा बेस एरिया के निर्माण को अपना मुख्य कार्य माना। एम.सी.सी. का नारा था, ''सशस्त्र संघर्ष को आगे बढ़ाओं, पीपुल्स आर्मी तथा बेस एरिया का विस्तार करो और संसदीय राजनीतिक तथा संशोधन वादियों के साथ संघर्ष को तीव्र करो'' इसने कृषि क्रान्ति के लिए त्रिपुरा, बिहार प0 बंगाल में स्पेशल एरिया के तौर पर कार्य क्षेत्र निर्धारित किया।

सी.पी.आई.एम.एल. पीपुल्स वार की स्थापना 1980 में आन्ध्र प्रदेश के कामरेड कोंडापल्ली सीता रमैय्या के अगुवाई में क्रान्तिकारियों के प्रयास से सम्भव हुआ था। सी.पी.आई.एम.एल.पीपुल्स वार तथा सी.पी.आई.एम.एम. का आपस में वर्ष 1998 में विलय हो गया। अब पार्टी सी.पी.आई.एम.एल.पी.डब्ल्यू. के नाम से जाना जाता है।

21 सितम्बर 2004 को सी.पी.आई.एम.एल.पी.डब्ल्यू.व एम.सी.सी. भी आपस में मिल गये और सी.पी.आई. माओवादी का गठन किया। इससे उनके सैनिक ताकत में भारी फायदा हुआ। देश के 28 राज्यों में से 15 राज्यों में नक्सलवादी अपना पांव जमा चुके है। देश के 252 जिले नक्सलवाद से पूर्ण रूप से प्रभावित है। पूर्व केन्द्रीय गृह मंत्री शिवराज पाटिल के अनुसार नक्सली 10 राज्यों के 180 जिलों के 2.5 लाख गाँवों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। देश के 14 हजार पुलिस थानों में से 3000 पुलिस थाने नक्सलियों की जद में है। हिन्दुस्तान के मानचित्र पर जिस नक्सल प्रभावित क्षेत्रों को चिन्हित किया जा रहा है। उनमें उत्तराखण्ड, बिहार, प0 बंगाल, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल व मध्य प्रदेश है। नक्सली 12 राज्यों में राज्य कमेटी गठित करने में सफल रहे हैं।

भारतीय साम्यवादी दलों के अधिकांश नेता सामंतवादी पृष्ठभूमि से आये हैं, उन्हें किसानों, श्रमिकों, पशुपालकों हरिजनों एवं आदिवासियों से स्वाभाविक लगाव नहीं है। यही वजह है कि इनकी जड़े सुख रही है। जबकि उन्मूलन के तमाम प्रयासों के बावजूद नक्सलवाद फल–फूल रहा है। भारत में नक्सलवाद के संस्थापक चारू मजूमदार ने कहा था कि नक्सलवाद को समाप्त नहीं किया जा सकता है, यह हमेशा जिंदा रहेगा, उतार–चढ़ाव व सेट बैक सम्भव है। अन्ततः 28 जुलाई 1972 को चारू मजूमदार की पुलिस हिरासत में मौत हो गई। इसके बाद भारत में सर्वहारा क्रान्ति को जबरदस्त आघात पहुँचा, उनकी मौत के बाद सी.पी.आई.एम.एल. की केन्द्रीय समिति बिखर गयी। पर पीपुल्सवार और पी.यू. पार्टी घटकों द्वारा नक्सलवाड़ी और कामरेड चारू मजूमदार की क्रान्तिकारी विरासत को आगे बढ़ाने का कार्य जारी रहा।

नक्सलवादी आन्दोलन, मार्क्सवादी, लेनिन वादी, माओवादी सिद्धान्तों कार्य नीति व रणनीति से संचालित है, और जो समाज को बोध कराता है कि उसके दुखो व जिन्दगी की अनिश्चितताओं की असली वजह ईश्वर भगवान अथवा किसी परमात्मा का आशीर्वाद या अभिशाप नहीं बल्कि सत्ताधारी, सरकार व राज्य ही है, जो शोषण व दमन की व्यवस्थाएं हैं, जो पूरी तरह पूँजीपति, उद्योगपति व शासक तथा प्रशासक वर्गों के हितों पर आधारित है। जिसका अंत कम्युनिष्ट नक्सलवादी सर्वहारा ही करेंगे। आज राकेट के प्रक्षेपित

होने के बाद वह किस क्षण चांद पर पहुंचेगा, यह तो तय है, पर यह सुनिश्चित नहीं है कि युवा पढ़ लिखकर डाक्टर, इंजिनियर प्रोफेसर बनेंगे या मजदूर बन जायेंगे और उन्हें भटकना नहीं पड़ेगा। कोई भी देश अथवा राष्ट्र अनन्त काल तक धुन्ध व भटकाव सहन नहीं कर सकता। इसलिए माओवादी, नक्सलवादी अपने मिशन में कामयाब होंगे और भारत में नक्सलवादियों का यह मानना है कि सर्वहारा क्रान्ति का सूरज उगेगा।

## सन्दर्भ


1. कवि आत्मा 'मार्क्स से मजुमदार तक' पांडुलिपि–पृष्ठ–1।
2. चारू मजुमदार की संकलित रचनाएं – पृष्ठ–221।
3. डॉ0 पुखराज जैन–पु0 प्रमुख राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन प्रकाशन –आगरा–पृष्ठ–183–184।
4. चारू मजुमदार की संकलित रचनाएं–पृष्ठ–5
5. उपरोक्त–पृष्ठ–20।
6. वही–पृष्ठ–152।
7. योजना।
8. कुरूक्षेत्र।
9. दैनिक समाचार पत्र।